INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

अशोक का धार्मिक उत्कर्षः वैदिक से बौद्ध धर्म तक का परिवर्तन

[1]सरिता कुमारी, [2]डॉ. धर्मेंद्र यादव (सहायक आचार्य)
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1-2]विभाग: इतिहास, डॉ. के.एन. मोदी विश्वविद्यालय, निवाई, राजस्थान-304021

सार
मौर्य सम्राट् अशोक का बौद्ध धर्म अंगीकरण वैदिक धर्म से बौद्ध धर्म की ओर एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन था। प्रारंभ में अशोक वैदिक धर्म के अनुयायी थे, परन्तु विभिन्न कारणों जैसे समण निग्रोध के उपदेश, उपगुप्त की प्रेरणा, कलिंग युद्ध में हुए भारी रक्तपात का पश्चाताप, और राजनीतिक आवश्यकताओं के चलते उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया। यह परिवर्तन दो अवस्थाओं में हुआ—पहले वे बौद्ध धर्म के उपासक बने और बाद में संघ की शरण लेकर धर्म प्रचार के लिए समर्पित हुए। कलिंग युद्ध के बाद उनका अहिंसा और दया के मार्ग पर चलने का निर्णय उनके धार्मिक उत्कर्ष का प्रमुख कारण रहा। अशोक ने ब्राह्मणों से लेकर बौद्ध भिक्षुओं तक दान और संरक्षण का विस्तार किया तथा साम्राज्य में धर्म की व्यापक प्रगति हेतु महत्वपूर्ण प्रयास किए। उनका यह धर्म परिवर्तन न केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक उत्कर्ष था, बल्कि समग्र सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी शांति, सहिष्णुता, और धार्मिक समरसता का संदेश लेकर आया।

मुख्य शब्दः सम्राट् अशोक, बौद्ध धर्म, वैदिक धर्म, धर्म परिवर्तन, कलिंग युद्ध, उपगुप्त, निग्रोध, अहिंसा, धार्मिक उत्कर्ष, मौर्य साम्राज्य।

भूमिका

सम्राट् अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के अंगीकरण से पूर्व सम्राट् वैदिक धर्म का अनुयायी था। यही कारण था कि सम्राट् अपने यहां ब्राह्मण साधुओं को भोजन कराते थे और उन्हें दान देते थे। किन्तु न्यग्रोध के उपदेश, स्वप्न की कथा, उपगुप्त की प्रेरणा, कलिंग युद्ध के पश्चाताप, राजनीतिक आवश्यकता आदि कारणों से उन्हें बुद्ध पर अत्यन्त श्रद्धा हुई और हर्षित होकर उन्होनें तथागत के धर्म को ग्रहण कर लिया। बहुत से इतिहासकारों की यह धारणा थी कि अशोक बौद्ध न थे। विलसन और एडवर्ड थॉमस की सम्मति में अशोक जैन थे। कल्हण कृत राजतरंगिणी में अशोक को शैव बतलाया गया है। उन्हें शिवमंदिर 'अशोकेश्वर', जो कल्हण के समय तक विख्यात रहा, का निर्माता भी कहा गया है। इसी प्रकार बौद्ध कथाओं में सम्राट् अशोक को बौद्ध धर्म का पहले कट्टर विरोधी कहा गया है। इस संदर्भ को प्रमाणित करने के लिए उन्हें 'नरक' का निर्माता भी कहा गया है। सम्राट अशोक ने राज्याभिषेक के कुछ वर्षों के बाद ही बौद्ध धर्म में दीक्षा ले ली थी, बौद्ध ग्रंथों में यह सर्वथा स्पष्ट है।

अनुश्रुतियों में दिए गए कारण :

अशोक की धर्म की ओर वृत्ति प्रारंभ हुई तब उसने सभी मतों के भीतर सत्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान प्रारंभ किया। सत्य—असत्य के निर्णय के लिए उसने सभी मतों के आचार्यों को आमंत्रित किया, उनको पुरस्कृत किया और उनसे विभिन्न प्रश्न किए। जो उत्तर उसको मिलें उनमें से किसी से उसको सतोष नहीं हुआ। एक दिन जब वह अपने महल के वातायन पर खड़ा था, उसने समण निग्रोध को भिक्षाटन के लिए सड़क पर जाते हुए देखा। वह उसकी ओर आष्कृट हो गया। निग्रोध अशोक के बड़े भाई सुमन का पुत्र था, जिसके जन्म से कुछ ही समय पहले सुमन की मृत्यु हो चुकी थी। निग्रोध के ही धार्मिक उपदेश से प्रभावित होकर अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। यह धर्म—परिवर्तन की घटना अभिषेक के चौथे वर्ष की है।

महावंश में उल्लेख मिलता है कि अशोक एक समय यति न्यग्रोध सामणेर को शान्तभाव से राजांगन से गुजरते देख बड़े प्रसन्न हुए। अशोक ने सामणेर से भगवान बुद्ध द्वारा कहा गया धर्म पूछा। सामणेर ने

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

सम्राट् को अप्रमाद वर्ग (अप्पमाद वग्ग) जो कि धम्मपद का द्वितीय वग्ग है, का उपदेश दिया, जिसे सुनकर अशोक अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसकी श्रद्धा बौद्ध धर्म पर आस्था दृढ़ हो गई। सिंहली अनुश्रुतियों में सम्राट् अशोक के बौद्ध धर्म ग्रहण का उल्लेख है। शासन के चौथे वर्ष सात वर्षीय भिक्षु निग्रोध ने बौद्ध धर्म की इन्हें दीक्षा दी। सम्राट को धर्म के सिद्धान्तों को समझाकर सम्राट और उनकी प्रजा को उन नियोगों पर स्थापित किया गया। इसके पश्चात् दिन दिन दान लेने वालों की संख्या को बढ़ाते हुए, अब सम्राट् 60 हजार बौद्ध भिक्षुओं को दान देने लगा, जैसा कि पहले वे ब्राह्मणों को दिया करता था। साठ हजार अन्य मतावलम्बियों को हटाकर अब 60 हजार बौद्ध भिक्षु महल में आश्रय पाने लगे।
महावंश से विदित होता है कि अशोक प्रारंभ में बौद्ध नहीं थे। बौद्ध धर्म के विपरीत वे अन्य धर्मों का साथ देते थे। महावंश की एक कथा के अनुसार राजा कालाशोक ने एक रात स्वप्न में देखा कि उनकी आत्मा लोहो कुम्बिया नरक में ढकेल दी गई है। राजा को इस स्वप्न से अत्यधिक दुःख हुआ। महावंश में वर्णित है कि, "राजा ने रात को स्वप्न में अपने आप को लोहकुम्भी (कुम्भीपाक–नरक) में पड़े हुये देखा। राजा बहुत भयभीत हुआ। उसको आश्वासन देने के लिये आकाश मार्ग से उसकी बहिन अनास्रवा अर्हत नन्दा थेरी आई। उसने उसे अपने बुरे कर्मों के लिए प्रायश्चित करने का उपदेश दिया। उसने अपने भाई से दुःखों से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध धर्म का आश्रय लेने को कहा। 'तूने बहुत बुरा किया। धार्मिक आर्यों से क्षमा मांग और उनका पक्ष ले बुद्धधर्म की रक्षा कर। ऐसा करने से तेरा कल्याण होगा' कहकर चली गई। राजा प्रातःकाल ही वैशाली के लिए चल दिया। महावन जाकर उसने भिक्षुसंघ को इकट्ठा किया। धर्म पक्ष ग्रहण करते हुए, सब धार्मिक भिक्षुओं से क्षमा मांगी। राजा ने अपने आपको धर्म–पक्ष की ओर बताया और कहा– "कि आप जैसे चाहें, वैसे बुद्धधर्म की उन्नति करें"। उनकी रक्षा का प्रबन्ध करके वह राजा अपने नगर को लौट गया।" इस वृत्त से स्पष्ट होता है कि सम्राट् पहले बौद्ध धर्म के अनुयायी न थे, उन्होनें बौद्ध धर्म के विपरीत यथेष्ट कार्य किया था, जिसके कारण महावंश के अनुसार उनकी आत्मा को नरक में जाना पड़ा। इस नरक के भय एवं बहिन आनन्दी के उपदेश देने पर सम्राट् अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

सम्राट् अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अंगीकरण के विषय में एक अन्य कथा मिलती है कि अशोक ने पाटलिपुत्र में एक ऐसे कारागृह का निर्माण कराया था जिसमें लोगों को तरह–तरह की यातनाएं दी जाती थी। इस कारागृह के अधिकारी का नाम गिरिक था। एक बार की बात है बालपण्डित नामक भिक्षु इस कारागृह में चला गया। किन्तु अपनी दैवी–शक्ति से वह कारागार की यातनाओं से बच निकला। अशोक को जब इसका पता चला तो उसने उक्त भिक्षु को बुलाया। अशोक के सम्मुख भी उसने अनेक करिश्में दिखाए। तदन्तर अशोक का मत–परिवर्तन हो गया।

उपगुप्त से मिली प्रेरणा :

धर्माचार्य उपगुप्त की प्रेरणा सेसम्राट् अशोक द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करने का वर्णन भी हमें विभिन्न स्थानों से प्राप्त होता है। बुद्ध ने मथुरा मेंदूसरी बार आगमन पर भविष्यवाणी शिष्य आनन्द से कही कि कालांतर में यहां उपगुप्त नामक एक प्रसिद्ध धार्मिक विद्वान् होगा, जो उन्हीं की तरह बौद्ध धर्म का प्रचार करेगा और उसके उपदेश से अनेक भिक्षु योग्यता और पद प्राप्त करेगें। इसकी पुष्टि में मथुरा के एक वणिक के घर उपगुप्त का जन्म हुआ। वह अत्यंत रूपवान और प्रतिभाशाली था, युवावस्था में विरक्त हो बौद्ध धर्म का अनुयायी बना। अशोक ने अपने व्यक्तिगत आचरण को धर्म के अनुकुल बनाया। उसने मांस खाना बंद कर दिया, महल में पशु वध कम कर दिया, दान और सार्वजनिक हित के कार्य किये, तीर्थयात्रायें की तथा सभी धर्मो के प्रति सहिष्णुता का व्यवहार किया। बौद्व सभा के अवसर पर भी उसने आजीविकों के लिए बराबर की पहाड़ियों में निवास स्थान (गुहाएं) बनवाये थे।
चीनी में उपगुप्त को यु–पो–कीयू–टो नाम दिया है और जापानी में उपकिकता लिखा है। जन्म से वह शूद्र था, सत्रह वर्ष की आयु में वह सघं में सम्मिलित हुआ। तीन साल पश्चात् वह अर्हत हुआ। इसी समय उसने 'मार' विजय की। दक्षिणी बौद्ध गाथाओंमें उपगुप्त का उल्लेख नहीं पाया जाता किन्तु उत्तरी बौद्ध गाथाओं ने इसे अशोक का समकालीन बताया है।
अशोक के काल में बौद्ध की तृतीय संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ जिसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत तिस्स ने की। इनसे राजा ने जानना चाहा बुद्ध शास्ता के दिए गए उपदेश कितने हैं? मोग्गलिपुत्त–तिष्य

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

स्थविर ने उसका उत्तर दिया। धर्म के चौरासी हजार स्कन्ध विभाग है। राजा ने प्रत्येक के लिए विहार बनवाकर उन सभी की पजूा करने का संकल्प लिया, राजाओं से विहार बनवाने आरम्भ किए एवं स्वयं भी अशोकाराम–पटना में भी विहार बनवाया। महाकाल नागराज ने बत्तीस लक्षणों और अस्सी व्यंजनों से युक्त, बड़ी आभा और तेज वाले बुद्ध स्वरूप की रचना की 'श्रमण गौतम बत्तीस महापुरुष लक्षणों से युक्त है, जिसे देखकर राजा बड़ा प्रसन्न और आश्चर्यचकित हो बोला, तथागत का नकली स्वरूप एसो है तो उनका असली स्वरूप कैसा होगा। महाराज अशोक सप्ताह भर, निरन्तर अक्षिपजूा नामक महोत्सव कराते रहें। धर्म्माशोक राजा की धर्म में आस्था बढ़ाने के लिए उन क्षीणास्रव भिक्षुओंने लोक–विवरण नामक चमत्कार दिखाया। पाप–कर्म करने की वजह से जो अशोक पहले चण्डाशोक नाम से प्रसिद्ध थे, वहीं बाद में पुण्य कर्म करने से धर्म्माशाके के नाम से प्रसिद्ध हुए। बौद्ध धर्माान प्राप्त कर मोग्गलिपुत्त तिस्स के प्रभाव से वह पर्णूरूपेण बौद्ध हुआ। तत्पश्चात् उपगुप्त के उपदेशों से प्रभावित हो उसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। दिव्यावदान की एक कथा के अनुसार अशोक की लुम्बिनी यात्रा के समय आचार्य उपगुप्त भी उसके साथ थे। उन्होनें ही अशोक से कहा था 'अस्मिन महाराज प्रियदसि भगवानो जातः' अर्थात् इसी स्थान पर प्रियदर्शी महाराज, भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था।

महावशं तथा दिव्यावदान ग्रन्थों में सम्राट् अशोक के द्वारा बौद्ध धर्म के अंगीकरण के सम्बन्ध में दो अवस्थाओं का वर्णन मिलता है। पहली अवस्था में सम्राट् बौद्ध धर्म की ओर केवल आकर्षित होते हैं। इस आकर्षण का श्रेय महावशं के अनुसार सामरेण अथवा निग्रोध को था परन्तु दिव्यावदान में इसका श्रेय बालपणादित्य को दिया जाता है। दिव्यावदान में बालपणादित्य के दूसरे नाम समुद्र का भी उल्लेख मिलता है। सम्भवतः निग्रोध, बालपणादित्य तथा समुद्र सुमनरो के ही अन्य नाम है। दूसरी अवस्था में सम्राट् बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं और उसके प्रचार के लिए पराक्रम करना प्रारम्भ कर देते हैं।

इस परिवर्तन के लिए दोनों ही ग्रन्थों में उपगुप्त को उत्तरदायी माना गया है। इस सत्य की पुष्टि अन्य साधनों से भी हो जाती है। चीनी तथा जापानी बौद्ध ग्रन्थों में भी उपगुप्त का उल्लेख मिलता है। जिसमें दोनों ही स्थानों के बौद्ध ग्रन्थ उपगुप्त को अशोक द्वारा धर्म परिवर्तन के लिए उत्तरदायी मानते हैं। बौद्ध ग्रन्थ महावशं के अनुसार सम्राट् अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के अंगीकरण की प्रथम अवस्था में नित्य साठ हजार भिक्षुओं को भोजन कराते थे एवं दिव्यवदान के अनुसार सम्राट् प्रथम अवस्था में ही बुद्ध तथा संघ की शरण लेकर धर्म हेतु उद्योग करने लगे थे। अतः दोनों ही ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि अशोक ने सामरेण द्वारा बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित होने के उपरान्त बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को मानना तथा उसकी ओर पराक्रम करने हेतु तत्पर हुए। उसकी यह अवस्था दिव्यावदान के अनुसार पराक्रम की अवस्था नहीं है वरन् पराक्रम के लिए तैयारी की अवस्था है। अतः सम्राट् को इस प्रथम अवस्था में केवल उपासक ही कहा जा सकता है। उपगुप्त द्वारा बौद्ध धर्म की शरण में आने के पश्चात् अशोक की दूसरी पराक्रमपूर्ण अवस्था प्रारम्भ होती है। इस अवस्था में सम्भवतः अशोक सघं की शरण में आ गए थे। यद्यपि बौद्ध धर्म के प्रति अशोक को प्रभावित कर उपासक बनाने का श्रेय सामणेर को ही प्राप्त है तथापि अशोक सम्बन्धी परम्पराओं में जो स्थान उपगुप्त को प्राप्त है वह सामणेर को नहीं है।

अशोक ने रूपनाथ, ब्रह्मगिरि तथा मास्की के प्रथम लघु शिलालेखों में अपने धार्मिक जीवन की इन्हीं दो अवस्थाओं का उल्लेख किया है। सम्राट् कहते हैं, अढ़ाई वर्ष से अधिक हुए कि मैं उपासक हुआ पर मैंने अधिक उद्योग नहीं किया किन्तु एक वर्ष से अधिक हुए जब से मैं संघ में आया हूं तब से मैंने खूब उद्योग किया है। इसी बीच जम्बूद्वीप में जो मनुष्य सच्चे माने जाते थे वे अपने देवताओं के सहित झूठे सिद्ध कर दिये गये हैं ... इस बात अर्थात् धर्म का विस्तार होगा और खूब विस्तार होगा, कम से कम डढ़े गुना विस्तार होगा। यह अनुशासन मैंने अपने प्रवास के 256वें दिन प्रचारित किया। अशोक के इस कथन से स्पष्ट होता है कि अशोक द्वारा धर्म को अंगीकरण की दो अवस्थाएं हैं। प्रथम अवस्था में अशोक ने कोई भी विशेष उद्योग नहीं किया जिसका काल अढ़ाई वर्ष है। दूसरी अवस्था का प्रारंभ सघं की शरण में आने के पश्चात् होता है जिसमें वह महत्वपर्णू उद्योग करते हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

कलिंग विजय में हुए पश्चात्ताप के कारण :

कलिंग मौर्य साम्राज्य की सीमाओं से लगा हुआ शक्तिशाली राज्य था। सुरक्षा की दृष्टि से इसे विजित करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत से व्यापारिक सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए कलिंग की भूमि और उसके समुद्र तट पर अधिकार करना लाभदायक समझा गया। अपने शासनकाल के आठवें वर्ष में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। अशोक ने इस विजय का उल्लेख अपने 13वें शिलालेख में इस प्रकार किया है– "राज्याभिषेक के आठ वर्ष बाद देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने कलिंग देश को विजय किया। वहां डेढ़ लाख मनुष्य कैद किए गए, एक लाख मनुष्य मारे गये तथा उससे कई गुना आदमी महामारी इत्यादि अन्य कारणों से मर गये। कलिंग देश विजित होने पर हुए पश्चाताप के बाद देवताओं के प्रिय का धर्मपालन, धर्म, कर्म और धर्मानुशासन अच्छे से हुआ। इस पर कलिंग को जीतने वाले देवताओं के प्रिय को बड़ा पश्चात्ताप होता है क्योकि जहां लोगों का वध, मरण या देश निकाला हो, उस देश को मैं जीतने पर भी जीता हुआ नहीं मानता हू। यह देवताओं के प्रिय को अत्यन्त दुःखद तथा भारी जान पडता है कि वहां सर्वत्र ब्राह्मण, श्रमण तथा दूसरे धर्म वाले और गृहस्थ रहते हैं, जिनमें सबसे पहले भरण पोषण विहित है, जिनमें माता–पिता की शुश्रूषा, मित्र, परिचित, सहायक सम्बन्धी और नौकर–चाकरों का उचित आदर और दृढ़भक्ति का विधान है। एसे लोगों का वहां घात, वध या सुख से रहते हुए को देश निकाला होता है। जिन सुव्यवस्थितों का स्नेह कम है उनके मित्रों, परिचितों, सहायकों तथा कुटुम्बियों को दुःख होता है। उनका भी उपघात होता है। यह दशा सभी मनुष्यों की है, परन्तु देवताओं के प्रिय को यह अधिक दुःखित जान पडता है।" यह शिलालेख अशोक के चौदहवें राजकीय वर्ष में अंकित कराया गया। यह युद्ध अशोक की 'आध्यात्मिक' विजय का कारण बना। इस युद्ध के समय से ही सम्राट् का धार्मिक जीवन प्रारम्भ हुआ और अब सम्राट् ने भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष को अपनाया। उसने शस्त्रों का विजय छोड़ धर्मविजय के लिए उद्योग प्रारम्भ किया। अशोक के अभिलेखों में उल्लेखित कलिंग विजय की घटना को सम्राट् अशोक के बौद्ध धर्म अंगीकरण का कारण माना जाता है। विभिन्न विद्वानों का मानना है कि कलिंग युद्ध से ही उसे धर्म–परिवर्तन की प्रेरणा मिली। उनके विचारों के अनुसार, इस युद्ध की विभीषणता ने उसके हृदय को द्रवित कर दिया परिणामस्वरूप उसका मन धर्म की ओर मुड़ गया और वह बौद्ध मत का अनुयायी हो गया।

सम्राट् अशोक ने जिस समय भिक्षुगतिक का जीवन आरम्भ किया उसी समय उसने एक और भी कार्य का श्रीगणेश किया था। शिला प्रज्ञापन 8 में कहा है– 'दीर्घकाल से राजा लोग विहार यात्राओं पर जाया करते थे। इसमें मृगया और ऐसे ही अन्य विनोद हुआ करते थे। राजा प्रियदर्शी, देवानांप्रिय दस वर्ष अभिषिक्त होकर संबोधि बोधिवृक्ष गया। इस तरह यह धर्मयात्रा आरम्भ हुई। बौद्ध धर्म के प्रति अपनी वृत्ति के विषय में सम्राट् अशोक बताता है कि ''अपने राज्याभिषेक के दस वर्ष बाद तक वह पूर्ववर्ती राजाओं की तरह विनोद के लिए विहार–यात्रा पर जाया करता था जिसमें वह शिकार खेलता था। पर उस वर्ष उसने इन विहार–यात्राओं का विचार सर्वथा छोड़ दिया और इनके स्थान पर धर्मयात्राएं शुरू कर दी। अपने राज्याभिषेक से दसवें वर्ष उसने बोधिवृक्ष की यात्रा की और यह उसकी पहली धम्मयात्रा थी और क्योकि यह वहीं समय है जब वह भिक्षु–गतिक हुआ था।'' अतः विदित होता है कि अशोक ने भिक्षुगतिक के रूप में अपना जीवन बोधिवृक्ष की यात्रा से प्रारंभ किया। अशोक के रूम्मिनदई एवं निगलीवा स्थान पर मिले लेखों से ज्ञात होता है कि अशोक अपने राज्यकाल के बीसवें वर्ष में स्वयं उस स्थान पर आया जिस पर उत्कीर्ण स्तम्भ खड़ा है, यहां अशोक ने पत्थर की एक विशाल दीवार बनवायी और वहां स्तम्भ स्थापित किया क्योंकि यह वहीं स्थान था जहां शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म हुआ था। साथ ही उसने लुम्बिनी गांव के सब धार्मिक कर, बलि क्षमा कर दिए और उस गांव को उपज का सिर्फ आठवां हिस्सा भू–राजस्व के रूप में देना तय किया।

धौली शिलालेख में अशोक ने कहा था कि कदाचित जो सीमान्त जातियां अभी तक नहीं जीती गई है उनके बारे में क्या आज्ञा है? तो मेरा यह उत्तर है कि वे मुझसे न डरें, मुझ पर विश्वास करें तथा मुझसे सुख की प्राप्ति करें कभी दुःख न पाएं। वे यह भी विश्वास करें कि जहां तक क्षमा का व्यवहार हो सकता है वहां तक राजा हमसे क्षमा का व्यवहार करेगें। मेरे लिए उन्हें धर्म का अनुसरण करना चाहिए जिससे उनका इहलोक एवं परलोक दोनों बनें। स्तम्भ–लेख संख्या 3 में अशोक कहते हैं– मनुष्य अपने ही अच्छे

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

काम को देखता है (और मन में कहता है) 'मैंने यह अच्छा काम किया है।' पर, वह अपने पाप को नहीं देखता (और मन में नहीं कहता) 'यह पाप मैंने किया है या यह दोष मुझमें है।' इस प्रकार की स्व–परीक्षा बड़ी कठिन है। तथापि मनुष्य को यह देखना चाहिए कि चंडता, निष्ठुरता, क्रोध, मान और ईर्ष्या यह सब बातों के कारण हैं (उसे अपने मन में सोचना चाहिए) 'इस सब बातों के कारण मेरी निंदा न हो।' इस बात की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि 'इससे मुझे इस लोक में सुख मिलेगा और इससे मेरा परलोक बनेगा।'

अशोक को व्यक्तिगत रूप से इस विजय की भयंकरता एवं भीषण रक्तपात से बहुत अधिक कष्ट पहुंचा था। अशोक द्वारा खुदवायी गई घोषणा भी यही व्यक्त करती है। अपने 13वें शिलालेख में अशोक कहता है, "अभिषिक्त होने के आठवें वर्ष देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने कलिंग को जीता यहां से डेढ़ लाख आदमी बाहर ले जाये गये, एक लाख आहत हुए और उससे कहीं अधिक सख्ं या में मरे अब कलिंग के विजित होने पर (होने के पश्चात्) देवताओं के प्रिय ने भली प्रकार धर्म विस्तार, धर्म से स्नेह और धर्मकामना की" कलिंग के युद्ध के पश्चात् अशोक ने युद्ध द्वारा साम्राज्य विस्तार की नीति को त्याग दिया। इस युद्ध की मार–काट ने उसे द्रवित कर दिया। यहीं से उसने दया धर्म की शरण ली। इससे अनुराग किया और इसे प्रचारित किया। डॉ. रायचौधरी ने लिखा है, ''कलिंग की विजय मगध तथा भारतवर्ष के इतिहास में एक महान् सीमा चिह्न है। यह विजय तथा विकास की उस नीति का अंत करता है जिसका प्रारंभ बिंबिसार ने अंग देश पर विजय प्राप्त करके किया था। यह एक नये युग का आरंभ करता है यह युग है शांति का, सामाजिक उन्नति का, धार्मिक प्रचार का तथा राजनीतिक अवरोध और सैनिक पतन का। इस काल में सेना के अभाव के कारण साम्राज्यवादी मगध के सैनिक उत्साह का उत्तरोतर विनाश होता गया। आध्यात्मिक विजय अथवा धर्म विजय का युद्ध आंरभ होने वाला था।" राजनीति शिथिल हुई, सैनिक शक्ति क्षीण हो गई, मगध की सैनिक शक्ति धीमी पड़ने लगी। दिग्विजय काल समाप्त हुआ और धर्म–विजय काल आरम्भ हो गया।

भगवतीप्रसाद पांथरी के अनुसार "कलिंग युद्ध की नग्न पैशाचिक क्रूरता उनके हृदय को आर्त कर चली। उनका हृदय कांच की नांई तिड़क उठा। हाथों का खड्ग दूर जा गिरा, आंखों में आंसू छलक आए, हृदय करुणा रोने लगी, सम्राट् पागल हो उठे। युद्ध की करुणता से बढ़कर सम्राट् का कारुण्य था। सम्राट् की इस विकलता में शाक्यमुनि का कल्याणमय सगीत आलंब हुआ। अशोक ने आंखे खोली और उस सगीत को मस्तक नवाया। अहिंसा की मंगलमय माला को करों में धारण कर सम्राट् अब बुद्धदेव के कल्याणपथ पर आरुढ़ हुए। अशोक ने अब तथागत के मार्ग का अनुसरण किया। सम्राट् का धर्म–परिवर्तन विश्व के मानव इतिहास में एक आकस्मिक घटना थी। इसी कलिंग युद्ध के पश्चात् सम्राट् का धर्म की ओर उत्तरोतर झुकाव बढ़ता गया और कुछ समय तक उपासक रहकर तत्पश्चात् पूर्ण रूप से प्रमुख धार्मिक बन संघ में प्रविष्ट हुए।" अतः एक सर्वाधिकार सम्पन्न राजा के रूप में अशोक ने युद्ध को त्यागकर अहिंसा की नीति का अनुगमन किया। यह अहिंसा मनुष्यों तक ही सीमित नहीं थी अपितु इसकी परिधि में पशु और पक्षी सम्मिलित थे। इस सिद्धान्त का पूर्ण विस्तार तब हुआ जब उसने आदेश देकर अनेक जीवों के वध पर प्रतिबंध लगा दिया।

निष्कर्ष

अशोक का धर्म परिवर्तन उनके व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभवों, राजनीतिक दूरदृष्टि और सामाजिक जिम्मेदारी का परिणाम था, जिसने मौर्य साम्राज्य में बौद्ध धर्म के प्रसार और अहिंसा की नीति को स्थापित किया। कलिंग युद्ध के भयावह अनुभवों ने उनके हृदय को मृदु कर अहिंसा तथा धर्म प्रचार की ओर उनकी आस्था को मजबूती प्रदान की। इस प्रकार अशोक का बौद्ध धर्म अंगीकरण न केवल उनकी धार्मिक यात्रा का प्रतीक था, बल्कि भारतीय इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात भी था, जिसने राजनैतिक नीति और सामाजिक संरचना को नए मूल्य और दृष्टिकोण प्रदान किए।

संदर्भ

- के. ए. नीलकंठ शास्त्री, (1969), नंद–मौर्ययुगीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ.सं. 236
- श्रीराम गोयल, (1992), नंद–मौर्य साम्राज्य का इतिहास, कुसुमाजंलि प्रकाशन, मेरठ, पृ.सं. 267
- के. ए. नीलकंठ शास्त्री, पर्वोक्त, पृ.सं. 248–249
- सत्यकेतु विद्यालंकार, (2000), मौर्य साम्राज्य का इतिहास, (छठा संस्करण), श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, पृ.सं. 524–427
- भदन्त आनन्द कौसल्यायन, (1942), महावशं, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृसं. 23–25
- सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्वोक्त, पृ.सं. 527
- डी.आर. भंडारकर, (1960), अशोक, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली, पृ.सं. 112
- भदन्त आनन्द कौसल्यायन, पूर्वोक्त, पृ.सं. 25–33
- सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्वोक्त, पृ.सं. 533
- राजबली पाण्डेय, (संवत् 2022), अषोक के अभिलेख, (प्रथम सस्ं करण), वाराणसीानमण्डल लिमिटडे , पृ.सं. 119–120
- रोमिला थापर, (2010), अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन, मेधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.सं. 42
- राजबली पाण्डेय, पूर्वोक्त, पृ.सं. 32
- डी.आर. भंडारकर, पूर्वोक्त, पृ.सं. 74–75
- राजबली पाण्डेय, पूर्वोक्त, पृ.सं. 93
- भगवती प्रसाद पांथरी, (2003), अशोक, किताब महल, इलाहाबाद, पृ.सं. 120
- दीनानाथ वर्मा, प्राचीन भारत (आदिकाल से1206 ई. तक),ज्ञानदा प्रकाषन (पी. एण्ड डी.), नई दिल्ली, पृ.सं. 174
- भगवती प्रसाद पांथरी, पूर्वोक्त, पृ.सं. 108–109